चिकित्सा सेवा ऐसी हो

– आभा कृष्ण

एक अस्पताल 'आदित्य बिरला मेमोरियल हॉस्पीटल' के नाम से चिंचवाड़, पूणे में अवस्थित है। यह पाँच सौ होड वाला सुपर स्पेसिलिटी अस्पताल है। सभी सुविधाओं से लैश है। सभी प्रकार की बिमारियों के लिए अनेक प्रकार की सुविधाएँ यहाँ उपलब्ध है। अनेक वरिष्ठ विशेषज्ञ डाक्टर भी उपलब्ध हैं। यह अस्पताल स्वर्गीय आदित्य बिड़ला जी के श्रद्धांजलि स्वरूप उनकी स्मृति में उनकी पत्नी श्रीमती सरला बिड़ला द्वारा निर्मित है। समाज को समर्पित इस अस्पताल के माध्यम से जरूरतमदों की नि:स्वार्थ और सच्ची सेवा की जा रही है।

मैं बार-बार बुखार से ग्रस्त हो रही थी। थोड़े घरेलु उपचार के बाद भी सुधार नहीं हो रहा था। इस अस्पताल का नाम मेरे एक मित्र ने मुझे सुझाया था। मैं यहाँ आकर डा॰ अंजली झामनानी मैडम से मिली और अपना हाल बतलाया। डा॰ मैडम ने उपरी तौर पर जाँच करके मुझे दो दिन की दवा लिख दी। दवा खाकर दो दिन बाद पुन: मिलने को कहा। दो दिन दवा खाने के उपरान्त भी कोई लाभ नहीं हुआ। दो दिन बाद डा॰ अंजली से मिलने अस्पताल गयी। उन्होंने सारा हाल सुनने के बाद मुझे अस्पताल में भर्ती होने का सुझाव दिया। मेरी बिमारी का कोई कारण प्रकट नहीं हो पा रहा था। इसलिए पूरी जाँच परीक्षण होनी थी। मैं अस्पताल में भर्ती हो गयी, मरीज संख्या MRN No. AB 1505 4444/6258 दिनांक 27/7/2015. उस अस्पताल की व्यवस्था पूरी तरह चाक चौबंद थी। वहाँ की नर्स एवं डाक्टर तुरंत सक्रिय हो गये। यह देखकर मैं चकित थी। प्रत्येक काम स्वत: वहाँ के स्टाफ समय-समय पर आकर कर रहे थे। चाहे दवा देना हो, टेस्ट के लिए ले जाना हो सब कुछ समयबद्ध होने लगा। चाय, नाश्ता, पानी, भोजन एकदम सही समय पर स्टाफ आकर दे जाते थे। यह सब देखकर मैं बहुत अभिभूत और कृतज्ञ महसूस करती थी। वास्तव में सच्ची सेवा भावना कोई इनसे सीखे। अस्पताल में तरह-तरह के मरीज थे और सभी के साथ यहाँ की नर्स, डाक्टर एवं स्टाफ अपनापन का भाव रख रहे थे। इतनी तत्परता, सहजता और मृदुलता के साथ मरीजों को सम्भालना आसान नहीं होता है।

मैं खुद भी बीमार थी परेशान हो जाती थी, परन्तु डॉ॰ और नर्स के चेहरे पर तनिक भी शिकन नहीं आती थी। बड़े प्यार से मुझे दिलाशा देती, समझाती थी। दस दिनों तक मैं अस्पताल में रही। समय कैसे बीत गया, मुझे पता भी नहीं चला। मैं दवा से ठीक हुई या उनकी नि:स्वार्थ सेवा भाव से यह मैं नहीं कह सकती है। उस अस्पताल का वह यादगार पल मैं अभी तक भूल नहीं पायी हूँ। डा॰ अंजली झामनानी, डा॰ खान, डा॰ रमण गायकवाड डा॰ वाद्योलीकर, डा॰ कल्याण गौड़ और डा॰ आशीष का स्नेहिल व्यवहार मुझे हमेशा याद रहेगा और मैं इन सबकी आभारी हूँ। जिस अस्पताल में ऐसे कर्त्तव्यनिष्ठ और मृदुल स्वभाव वाले डाक्टर होगे, वहाँ से तो रोगी स्वस्थ और रोग मुक्त होकर ही बाहर आएगा, एक अच्छी और सुखद अनुभूति के साथ।

यह अस्पताल निरन्तर अपने उद्देश्य में सफल रहे और उत्तरोत्तर ऊँचाइयों के छुए। मानव के कल्याणार्थ यह संस्था सदैव फले-फूले। यही मेरी कामना है।

मेरी कामना है कि देश भर के सभी सरकारी अस्पतालों में इसी प्रकार की चिकित्सा सेवा उपलब्ध हो। सरकारें विचार से, सोच से भले ही दिवालिया हो, लेकिन धन से तो दिवालिया नहीं हो सकती है। इसलिए सरकार अगर चाह लेगी तो ऐसी व्यवस्था सभी सरकारी अस्पतालों में संभव है। सरकारी अस्पताल के प्रशासक एवं सरकारों को ईश्वर सद्‌बुद्धि दे।

इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपनी भावना की अभिव्यक्ति को विराम देती हूँ।